Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

On the Auspicious Occasion
of
D. A. V. College Centenary Celebration

We announce to publish

FOUNDERS OF SCIENCES IN ANCIENT INDIA

IN TWO VOLUME

By Dr Svami Satya Prakash Sarasvati

Contents

I Atharvan—The First Discoverer of Fire
II Fire leads to Mechanical Devices
III Dīrghatamas—The Discoverer of the Vedic Era
IV Gārgya—The First Enumerator of Consteliations
V Bharadvāja Presides over the First Medicinal Plants Symposium
VI Ātreya Punarvasu and His Academy of Medicine
VII Suśruta—The Father of Surgery
VIII Kaṇāda—The First Expounder of Realism, Law of Causation and Atomic Theory
IX Medhātithi—First to Extend Numerals to Billions
X Āryabhata lays Foundations of Algebra
XI Lagadha—The First to Rationalize Astronomy
XII Lātadeva & Sriṣeṇa Introduce Greek Astronomy to India
XIII Baudhāyana—The First Great Geometer

The volume is printed on sunlit offset paper by Offset process.
Full cloth bound, Pages 700, Price Rs. 500/-
Send Your Order with draft to
GOVINDRAM HASANAND
4408, Nai Sarak, Delhi-110006

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

वेदप्रकाश

संस्थापक : स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष ३५, अंक ६] वार्षिक मूल्य : दस रुपये [जनवरी १९८६

सम्पा० : विजयकुमार आ० सम्पादक : स्वा० जगदीश्वरानन्द सरस्वती

हनुमच्चरित

—श्री शिवपूजनसिंह कुशवाहा, एम० ए०

श्री हनूमान्जी की उत्पत्ति

हनूमान्जी की जन्म-कथा भिन्न-भिन्न पुराणों में भिन्न-भिन्न प्रकार की पाई जाती है पर इस विषय में सभी एकमत हैं कि हनूमान् के पिता **केसरी** और माता **अंजनी** थी। किसी भी प्राणी का जन्म एक बाप द्वारा एक ही माता के गर्भ से देखा जाता है परन्तु हनूमान् केसरी और अंजनी के अतिरिक्त, महादेव-पार्वती तथा वायु (मरुत्) के पुत्र भी कहे गये हैं, अर्थात् ३ पिताओं से हनूमान्जी उत्पन्न हुए, क्या यह माननीय है ? पुराणों ने बड़ा ही अनर्थ विश्व में फैलाया है। मिथ्या कथा लिखकर हनूमान्जी को कहीं का न छोड़ा।

शिवपुराण, शतरुद्र संहिता अध्याय २० श्लो० १ से १० तक[1]—

"अतः परं शृणु प्रीतया हनुमच्चरितं मुने !
यथा चकाराशु हरो लीलास्तद्रूपतो वराः ॥१॥
चकार सुहितं प्रीत्या रामस्य परमेश्वरः।
तत्सर्व्वं चरितं विप्र शृणु सर्वत्र सुखावहम् ॥२॥
एकस्मिन्समये शम्भुरद्भुतोतिकरः प्रभुः।
ददर्श मोहिनीरूपं विष्णोः सहि वरुद्गुणः ॥३॥
चक्रे स्वं क्षुभितं शम्भुः कामबाणहतो यथा।
स्वं वीर्यम्पातयामास रामकार्य्यार्थमीश्वरः ॥४॥
तद्वीर्यं स्थापयामासुः पत्रे सप्तर्षयश्च ते।
प्रेरिता मनसा तेन रामकार्यार्थमादरात् ॥५॥

1. "श्री शिवमहापुराणम्" पृष्ठ ६१४ [संवत् २०२० वि० में पण्डित पुस्तकालय काशी द्वारा प्रकाशित] पुस्तकाकार।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तैर्गौतमसुतायां तद्वीर्यं शम्भोर्महर्षिभिः।
कर्णद्वारा तथाजन्यां रामकार्यार्थमाहितम् ॥६॥
ततश्च समये तस्माद्धनूमानिति नामभाक्।
शम्भुर्जज्ञे कपितनुर्महाबलपराक्रमः ॥७॥
हनूमान्स कपीशानः शिशुरेव महाबलः।
रविबिम्बं बभक्षाशु ज्ञात्वा लघुफलम्प्रगे ॥८॥
देवप्रार्थनया ततोऽव्यजज्ज्ञात्वा महाबलम्।
शिवावतारं च प्राप वरान्दत्तान्सुरर्षिभिः ॥९॥
स्वजनन्यन्तिकं प्रागादथ तोऽतिप्रहर्षितः।
हनूमान्सर्वमाचख्यौ तस्यै तद्वृत्तमादयत् ॥१०॥"

विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र कृत भा० टी०—

"नन्दीश्वर बोले, हे मुने ! इसके आगे हनुमान्जी का चरित्र सुनो, जिस प्रकार हनुमान्जी के रूप से शिवजी ने सुन्दर लीला की है ॥१॥ हे प्रिय ! परमेश्वर शिव ने प्रीति करके रामचन्द्रजी का परमहित किया है, उन सब सुखों को देनेवाले चरित्र को सुनो ॥२॥ एक समय गुणयुक्त लीला करनेवाले, प्रभु शिव ने विष्णु का मोहिनीरूप देखा ॥३॥ तो कामदेव के बाण से ताडित हुए शिवजी ने अपने-आपको काम से व्याकुल किया और रामचन्द्रजी के कार्य के अर्थ अपना वीर्य गिराया ॥४॥ तब आदर से रामचन्द्र के कार्य के अर्थ मन से शिवजी के द्वारा प्रेरणा किये हुए उन सप्त ऋषियों ने उस वीर्य को पत्ते पर स्थापित किया ॥५॥ उन महर्षियों ने वह शिवजी का वीर्य गौतम की पुत्री में कर्ण के द्वारा तथा अंजनी में रामचन्द्रजी के कार्यार्थ प्रवेश किया ॥६॥ उस समय उस वीर्य से महाबली तथा पराक्रमयुक्त वानर के शरीरवाले हनुमान् नामक शिवजी उत्पन्न हुए ॥७॥ वह महाबली वानर हनुमान् बालकपन में ही सूर्य को लघुफल जान सूर्यमण्डल को खाने को उद्यत हुए ॥८॥ और देवताओं की प्रार्थना से सूर्य को त्यागा, तब देवता तथा ऋषियों ने महाबली शिव का अवतार जान उनको वरदान दिए ॥९॥ तब वह हनुमान्जी अति प्रसन्न हो अपनी माता के निकट गये और उससे आदरपूर्वक सब वृत्तान्त (वर पाने का) कहा ॥१०॥"[1]

समीक्षा—आख्यायिकाकार शैवों ने हनूमान् को शिवावतार (रुद्रावतार) सिद्ध करने के लिए यह उपर्युक्त आख्यायिका लिखी जो सर्वथा अश्लील, सृष्टि-क्रमविरुद्ध अज्ञानमूलक है।

---

१. "शिव महापुराण" पृष्ठ ६४३ [संवत् २०१६ वि० सन् १९५९ ई० में खेमराज श्रीकृष्णदास, अध्यक्ष—'श्री वेङ्कटेश्वर' स्टीम्-प्रेस, बम्बई-४ द्वारा प्रकाशित]।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हनूमान् को शिव का अवतार सिद्ध करने के लिए यह कथा गढ़ी गई है, इसलिए शिव ने स्वयं अपना वीर्य अपनी इच्छा से गिरा दिया, न कि वीर्य पार्वती के रूप के कारण स्खलित हुआ। जब वीर्य गिरा तो उसी समय सप्तर्षि कहाँ से आ गये ? और 'पत्ते पर लेकर उसे सुरक्षित रखा' यह भी महागप्प है। सप्तर्षि कौन हैं, पुराणकर्त्ता ने नहीं लिखा, नहीं तो पोल खुल जाती। उत्तरदिशा में सप्तर्षि-मण्डल है, जो बराबर ध्रुव के चारों ओर घूमते दिखलाई देता है; दूसरा सप्तर्षि-मण्डल इसी शरीर में दो नेत्र, दो कान, दो नाक, एक जीभ है इस प्रकार सप्त (७) ऋषि हैं—"सप्त ऋषयः प्रति हिता शरीरे" यह वेदमन्त्र है। इस कथाकार से पूछना चाहिए कि इनमें से कौन आए थे ? सौ जन्म में भी शैव लोग इसका उत्तर नहीं दे सकते। जब सप्तर्षियों का कथन ही सर्वथा मिथ्या सिद्ध हो गया तब पत्ते पर वीर्य का सुरक्षित रखना और अंजनी के कान में डालना तो स्वयं ही असिद्ध हो गया। पुनश्च कान में वीर्य डालने से सन्तान कैसे होगी ? यह तो गप्पों की परदादी है।

अतः शिवपुराण की सारी कथा असम्भव एवं सृष्टिक्रमविरुद्ध होने से इसे बीसवीं शताब्दी में कोई भी बुद्धिमान् मान नहीं सकता। निष्कर्ष यह निकला कि हनूमान् न तो शंकर के अवतार थे, न शिव के वीर्य से भवानी में उत्पन्न हुए थे वरन् केसरी के क्षेत्रज (नियोगज) पुत्र थे।

वायुनन्दन, इसपर कवि की कल्पना देखिए—

भविष्यपुराण में—

"शिवोऽपि च स्वपूर्वार्द्धाज्जातो वै मानसोत्तरे।
गिरौयत्र स्थितादेवीगौतमस्य तनूद्भवा।
अञ्जना नाम विख्याता कौशकेसरिभोगिनी ॥३२॥
रौद्रं तेजस्तदा घोरं मुखे केसरिणो ययौ।
स्मरातुरः कपीन्द्रस्तु बुभुजे तां शुभाननाम् ॥३३॥
एतस्मिन्नंतरे वायुः कपीन्द्रस्यो तनौ गतः।
वांछितामंजनां शुभ्रं रमयामास वै बलात् ॥३४॥
द्वादशाब्दमतो जातं देम्पत्योर्मैथुनस्ययो।
तदनुभ्रूणमासाद्य वर्षमात्रं हि सा दधत् ॥३५॥
पुत्रो जातस्स रागात्मा स रुद्रो वानराननः।
कुरूपाच्च ततो मात्रा प्रक्षिप्तोऽभूद्गिरेरधः ॥३६॥
बलादागत्य बलवान्दृष्ट्वा सूर्यमुपस्थितम्।
विलिख्य भगवान्रुद्रोदेवस्तत्र समागतः ॥३७॥
वज्रसंताडितो वापि न तत्याज तदा रविम्।
भयभीतस्तदा प्रांशुस्सूर्यं त्राहीति जल्पितः ॥३८॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कथा में केसरी के मुख में, कल्पना मिथ्या है न ? जैसे कान में वीर्य डालना असत्य है उसी प्रकार मुख में वीर्य डालना भी मिथ्या ही है; क्योंकि वहाँ सप्तर्षि भी कोई नहीं था, तो वीर्य का पतन और पत्ते में लेकर सुरक्षित रखना और मुख में डालना ये दोनों बातें स्वयं मिथ्या सिद्ध हो जाती हैं। और प्रमाण की आवश्यकता ही क्या रही ? दोनों में सत्य कौन ? फिर बारह वर्ष तक केसरी भोग करता ही रह गया, क्या यह सम्भव है ? इसे तो पौराणिक ही बतलावेंगे कि यह महा-घोटाला क्यों ? विश्व में जो न कभी हुआ, न होगा और न हो सकता है। सृष्टि-नियमविरुद्ध बातें कालत्रय में मिथ्या होती हैं।

अतः हनूमान्‌जी न शंकर-पार्वती के पुत्र थे और न इस कथा के अनुसार वायु के ही पुत्र थे। तर्क की कसौटी पर कसने से उक्त दोनों कथाएँ मिथ्या सिद्ध हो जाती हैं।

हनूमान्‌जी का उत्पन्न होते ही सूर्य को निगलना भी गप्पों का सिरताज है। कहाँ सूर्य पृथिवी से साढ़े तेरह लाख गुणा बड़ा और नौ करोड़ तीस लाख मील पृथिवी से दूर और कहाँ हनूमान् क्षुद्र शरीर बालक वानर के साथ, कैसी असम्भव कथा रची गई है ! पुनः सूर्य के पास रावण कहाँ से, क्यों कूद पड़ा यह भी मिथ्या कल्पनामात्र है। सूर्य तो अग्नि का पिण्ड है, वहाँ जाना भी असम्भव है उसका निगलना तो और कठिन है। यह तो कवि की कल्पना की उड़ान है। हनूमान्‌जी व रावण का मल्लयुद्ध कहाँ पर हुआ ? युद्ध के लिए शरीर का आधार चाहिए। क्या वहाँ पर उनको मल्लयुद्ध के लिए भूमि थी ? या पुराणकर्त्ता की छाती पर लड़े ? यह सब कवि की कल्पना नहीं तो क्या है ? ऐतिहासिक सत्य का इसमें लेशमात्र भी नहीं है।

हनूमान् नाम क्यों पड़ा, इसपर भी लालबुझक्कड़ों ने एक कथा गढ़ डाली कि जब हनूमान्‌जी उत्पन्न हुए तो सूर्य को एक फल समझकर उसको लेने के लिए उछल पड़े। यह विपत्ति देखकर इन्द्र ने वज्र मारा जिससे उनकी बायीं ठुड्डी टूट गई इसी से इनका नाम हनूमान् पड़ा।

यही कथा वाल्मीकीय रामायण, युद्धकाण्ड में देखिए, वहाँ न सूर्य को निगलने का तथा न इन्द्र द्वारा वज्र से मारने का वर्णन है—

उद्यन्तं भास्करं दृष्ट्वा बालः किल बुभुक्षितः।
त्रियोजनसहस्रं तु अध्वानमवतीर्य हि ॥१२॥
आदित्यमाहरिष्यामि न मे क्षुत् प्रतियास्यति।
इति निश्चित्य मनसा पुप्लुवे बलदर्पितः ॥१३॥
अनाधृष्यतमं देवमपि देवर्षिराक्षसैः।
अनासाद्यैव पतितो भास्करोदयने गिरौ ॥१४॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रुत्वा तद्वार्तवचनं रावणो लोकरावणः।
पुच्छे गृहीत्वा तं कीशं मुष्टियुद्धमचीकरत् ॥३९॥
तदा तु केसरिसुतो रविं त्यक्त्वा रुषान्वितः।
वर्षमात्रं महाघोरं मल्लयुद्धं चकार ह ॥४०॥
श्रमितो रावणस्तत्र भयभीतस्समंततः।
पलायनपरो भूतः कीशरुद्रेण ताडितः ॥४१॥

—[भविष्यपुराण, प्रतिसर्ग पर्व, चतुर्थ खण्ड, अध्याय १३ श्लोक ३२ से ४१ तक][1]

अर्थ—"एक बार शिवजी मानसोत्तर पर्वत पर गये। वहाँ गौतम की पुत्री अंजना, केसरी की पत्नी रहती थी। शिवजी का तेज (वीर्य) केसरी के मुख में चला गया और उससे कामातुर होकर केसरी अंजना से भोग करने लगा। इसी बीच में वायु ने भी केसरी के शरीर में प्रवेश किया और वह बलपूर्वक उसके प्रभाव से १२ वर्ष तक अंजना से विषयभोग करता रहा। इस लम्बे मैथुन से अंजना के गर्भ रह गया और एक वर्ष के पश्चात् वानर के सदृश मुखवाले रुद्र (हनूमान्) जी को जन्म दिया जो कि अत्यन्त कुरूप था। इससे माता ने उसे त्याग दिया। हनूमान् बालक ने बलपूर्वक सूर्य को निगल लिया। महादेवजी देवताओं के साथ वहाँ आ गये किन्तु वज्र से ताडित होने पर भी उन्होंने सूर्य को नहीं छोड़ा, तब सूर्य ने भयभीत होकर त्राहि-त्राहि (बचाओ-बचाओ) की पुकार की, तब उसके दीन वचनों को सुनकर रावण ने हनूमान् की पूंछ पकड़कर खींची। इसपर हनूमान् ने सूर्य को तो छोड़ दिया परन्तु क्रोधित होकर रावण से युद्ध करने लगे और एक वर्ष तक उससे मल्लयुद्ध करते रहे। रावण थक गया और डरकर तथा हनूमान्जी से ताडित होकर वहाँ से भाग गया।"

समीक्षा—भविष्यपुराण की उपर्युक्त कथा शिवपुराण की कथा से नितान्त भिन्न है। दोनों में सही कौन है ? जब पौराणिकों के मत में अष्टादश पुराणों के रचयिता एक ही व्यक्ति वेदव्यास जी हैं, तब उत्पत्ति तो एक प्रकार की होनी चाहिए। यह पुराणलीला है। वास्तव में दोनों कथाएँ काल्पनिक व मिथ्या हैं।

इस कथा से यह बात तो सिद्ध है कि अंजना मनुष्य-कन्या थी, अतः केसरी भी मनुष्य ही था, आजकल के समान वानर पशु न था। ऐसी दशा में हनूमान्जी पूंछवाले वानर पशु नहीं वरन् मनुष्य थे।

शिवपुराण की कथा में शिव-वीर्य अंजना के कान में डाला गया, पर इस

---

१. भविष्य महापुराण, सटिप्पणी मूलमात्र (पुस्तकाकार) पृष्ठ ५६९
—[संवत् २०१५ वि०, सन् १९५९ ई० में 'श्री वेङ्कटेश्वर' स्टीम् प्रेस, बम्बई, द्वारा प्रकाशित]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अग्रगण्य है। तात ! एक समय शापवश वह कपियोनि में अवतीर्ण हुई। उस समय वह वानरराज महामनस्वी कुञ्जर की पुत्री इच्छानुसार रूप धारण करनेवाली थी। इस भूतल पर उसके रूप की समानता करनेवाली दूसरी कोई स्त्री नहीं थी। वह तीनों लोकों में विख्यात थी। उसका नाम अञ्जना था। वह वानरराज केसरी की पत्नी हुई ॥८-६॥ एक दिन की बात है, रूप और यौवन से सुशोभित होनेवाली अञ्जना मानवी स्त्री का शरीर धारण करके वर्षाकाल के मेघ की भाँति श्याम कान्तिवाले एक पर्वतशिखर पर विचर रही थी। उसके अंगों पर रेशमी साड़ी शोभा पाती थी। वह फूलों के विचित्र आभूषणों से विभूषित थी ॥१०-११॥ उस विशाललोचना बाला का सुन्दर वस्त्र तो पीले रंग का था, किन्तु उसके किनारे का रंग लाल था। वह पर्वत के शिखर पर खड़ी थी। उसी समय वायु देवता ने उसके उस वस्त्र को धीरे से हर लिया ॥१२॥ तत्पश्चात् उन्होंने उसकी परस्पर सटी हुई गोल-गोल जाँघों, एक-दूसरे से लगे हुए पीन उरोजों तथा मनोहर मुख को भी देखा ॥१३॥ उसके नितम्ब ऊँचे और विस्तृत थे। कटिभाग बहुत ही पतला था। उसके सारे अंग परम सुन्दर थे। इस प्रकार बलपूर्वक यशस्विनी अञ्जना के अंगों का अवलोकन करके पवन देवता काम से मोहित हो गये ॥१४॥ उनके सम्पूर्ण अंगों में कामभाव का आवेश हो गया। मन अञ्जना में ही लग गया। उन्होंने उस अनिन्द्य सुन्दरी को अपनी दोनों विशाल भुजाओं में भरकर हृदय से लगा लिया। अञ्जना उत्तम व्रत का पालन करनेवाली सती नारी थी। अतः उस अवस्था में पड़कर वह वहीं घबरा उठी और बोली—कौन मेरे इस पातिव्रत्य का नाश करना चाहता है ? ॥१६॥ अञ्जना की बात सुनकर पवनदेव ने उत्तर दिया—'सुश्रोणि ! मैं तुम्हारे एकपत्नी-व्रत का नाश नहीं कर रहा हूँ। अतः तुम्हारे मन से यह भय दूर हो जाना चाहिए॥१७॥ यशस्विनि ! मैंने अव्यक्त रूप से तुम्हारा आलिङ्गन करके मानसिक संकल्प के द्वारा तुम्हारे साथ समागम किया है। इससे तुम्हें बल-पराक्रम से सम्पन्न एवं बुद्धिमान् पुत्र प्राप्त होगा ॥१८॥ वह महान् धैर्यवान्, महातेजस्वी, महाबली, महापराक्रमी तथा लाँघने और छलाँग मारने में मेरे समान होगा' ॥१६॥ महाकपे ! वायुदेव के ऐसा कहने पर तुम्हारी माता प्रसन्न हो गईं। महाबाहो ! वानरश्रेष्ठ ! फिर उन्होंने तुम्हें एक गुफा में जन्म दिया ॥२०॥ बाल्यावस्था में एक विशाल वन के भीतर एक दिन उदित हुए सूर्य को देखकर तुमने समझा कि यह भी कोई फल है; अतः उसे लेने के लिए तुम सहसा आकाश में उछल पड़े॥२१॥ महाकपे ! तीन सौ योजन ऊँचे जाने के बाद सूर्य के तेज से आक्रान्त होने पर भी तुम्हारे मन में खेद या चिन्ता नहीं हुई॥२२॥ कपिप्रवर ! अन्तरिक्ष में जाकर जब तुरन्त ही तुम सूर्य के पास पहुँच गये, तब इन्द्र ने कुपित होकर तुम्हारे ऊपर तेज से प्रकाशित वज्र का प्रहार किया ॥२३॥ उस समय उदयगिरि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पतितस्य कपेरस्य हनुरेका शिलातले।
किंचिद्भिन्ना दृढहनुर्हनूमानेष तेन वै ।।१५।।
—[वाल्मीकीय रामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग २८]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम' कृत भा० टी०—

'जब यह बालक था उस समय की बात है, एक दिन इसको बहुत भूख लगी थी। उस समय उगते हुए सूर्य को देखकर यह तीन हजार योजन ऊँचा उछल गया था। उस समय मन-ही-मन यह निश्चय करके कि 'यहाँ के फल आदि से मेरी भूख नहीं जाएगी, इसलिए सूर्य को (जो आकाश का दिव्य फल है) ले आऊँगा' यह बलाभिमानी वानर ऊपर को उछला था।।१२।-।।१३।। 'देवर्षि और राक्षस भी जिन्हें परास्त नहीं कर सकते, उन सूर्यदेव तक न पहुँचकर यह वानर उदय-गिरि पर ही गिर पडा ।।१४।। 'वहाँ के शिलाखण्ड पर गिरने के कारण' इस वानर की एक हनु (ठोढ़ी) कुछ कट गई; साथ ही अत्यन्त दृढ़ हो गई, इसलिए यह 'हनूमान्' नाम से प्रसिद्ध हुआ ।।१५।।'[1]

समीक्षा—यह कथा भी सर्वथा खयाली पुलाव है। यहाँ पर सूर्य के निगलने की बात नहीं है, निगलने से पहले ही गिर पड़े थे। इस प्रकार सभी कथाओं में भिन्नता है।

पुनः वाल्मीकीय रामायण में हनूमान्‌जी की जन्म-कथा—

(जामवान् हनूमान् जी से ही कहते हैं)—

अप्सराऽप्सरसां श्रेष्ठा विख्याता पुञ्जिकस्थला।
अञ्जनेति परिख्याता पत्नी केसरिणो हरेः।।८।।
विख्याता त्रिषु लोकेषु रूपेणाप्रतिमा भुवि।
अभिशापादभूत् तात कपित्वे कामरूपिणी।।९।।
दुहिता वानरेन्द्रस्य कुञ्जरस्य महात्मनः।।९½।।
मानुषं विग्रहं कृत्वा रूपयौवनशालिनी।।१०।।
विचित्रमाल्याभरणा कदाचित् क्षौमधारिणी।
अचरत् पर्वतस्याग्रे प्रावृडम्बुदसंनिभे।।११।।
....
तदा शैलाग्रशिखरे वामो हनुरभज्यत।
ततो हि नामधेयं ते हनुमानिति कीर्तितम्।।२४।।
—[वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धाकाण्ड अ० ६६]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम' कृत भा० टी०—

"(वीरवर! तुम्हारे प्रादुर्भाव की कथा इस प्रकार है)—

पुञ्जिकस्थला नाम से विख्यात जो अप्सरा है, वह समस्त अप्सराओं में

१. "श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण", द्वितीय भाग, पृष्ठ ११२२-११२३ [संवत २०२५ वि० में गीता प्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित, द्वितीय संस्करण]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुलसीदासजी ने राम के भक्त होने के कारण और स्वतन्त्र रूप से भी हनूमान्जी के प्रति भक्ति प्रदर्शित करते हुए स्तोत्रों की रचना की है। इस ग्रन्थ के अतिरिक्त 'कवितावली', 'उत्तरकाण्ड' और 'हनूमान्-बाहुक' में भी उन्होंने स्वतन्त्र नायक के रूप में हनूमान् का गौरव-गान किया है। आदिकाव्य रामायण में वे कपिकुंजर तथा वायुपुत्र भी माने जाने लगे। प्रचलित रामायण में वानरत्व-विषयक विशेषणों के बाहुल्य से उनके वास्तविक वानरत्व की धारणा बनने लगी। तत्पश्चात् कपि-योनि में रुद्रावतार और राम के आदर्श भक्त के रूप में उनकी पूजा होने लगी।[1]

हनूमान्जी का शारीरिक बल व शक्ति—

हनूमान्जी अनेक साहसिक कार्यों के कर्त्ता हैं।[2]

अनेक अद्भुत और महान् कृत्यों का श्रेय हनूमान्जी को प्राप्त है जैसे—सागर पार करना, अशोक वन-विध्वंस, लंका-दहन, द्रोणाचल-आनयन और युद्ध-विषयक पराक्रम। उनके द्रुमशिला-युद्ध, उनकी लांगूल के दाँव-पेंच, उनके पाद-प्रहार, उनके विकराल तमाचे और थप्पड़ विश्व के एक अद्वितीय मल्ल का चित्र प्रस्तुत करते हैं। राम व लक्ष्मण को वे अपनी पीठ पर चढ़ाकर पम्पासर से ले गये थे। बड़े-बड़े पर्वत उनके शरीर के भार से दब जाते या कसमसा उठते वा फूट पड़ते थे। वे अणिमा-गरिमा सिद्धियों पर अधिकार रखनेवाले महान् योगी भी हैं। यौगिक सिद्धियाँ 'अणिमा' आदि आठ प्रकारों में संख्यात हैं, यथा—(१) अणिमा, (२) महिमा, (३) गरिमा, (४) लघिमा, (५) प्राप्ति, (६) प्राकाम्य, (७) ईशित्व, और (८) वशित्व।[3]

अणिमा व लघिमा—सागर को तैरते हुए पार कर लंका की द्वारपालिका 'लंकिनी' निशाचरी को निहित करने के पश्चात् जनकनन्दिनी के अन्वेषण-क्रम में श्री हनूमान्जी गोस्वामी तुलसीदास के मत से मशक के समान सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप धारण कर रात्रि में सारी लंकानगरी का निरीक्षण कर लेते हैं, किन्तु अत्यन्त अणु या लघु रूप होने के कारण वहाँ के निवासियों को उनका कुछ पता तक नहीं चलता। हनूमान्जी शत्रुओं के लिए सर्वथा अदृश्य हो गये थे (अध्यात्मरामायण ५।१।२)। अशोकवाटिका में पहुँचकर और सीसम वृक्ष के पत्तों में बैठे-बैठे वे

---

१. श्री डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, एम० ए० कृत "हिन्दी अनुशीलन" विशेषांक (प्रयाग) सन् १९६० ई०, पृ० ३४२ पर डॉ० कामिल बुल्के का लेख।

२. "Superlatives crowd round Hanuman as you contemplate him."—श्री एस० एस० शास्त्री कृत "लेक्चर्स ऑन रामायण" अध्याय १७ [सन् १९५२ ई०, मद्रास]

३. अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा। प्राप्ति प्राकाम्यीशित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः ॥" [अमरकोष, रामाश्रयी व्याख्या १।१।३४ (१७-१८)]।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के शिखर पर तुम्हारे हनु (ठोडी) का बायां भाग वज्र की चोट से खण्डित हो गया। तभी से तुम्हारा नाम हनूमान् पड़ गया ॥२४॥"[1]

समीक्षा—यदि यह कथा ज्यों-की-त्यों सत्य मान ली जाती है तो ऐतिहासिक दृष्टि से हनूमान् का जन्म संदिग्ध ही रह जाता है। वायु जड़ है, सर्वत्रगामी है, पंचभूतों में एक भूत है। पंचभूत जड़, को देखकर नारी, मनुष्यवत् न कामी बन सकता है और न किसी से सम्भोग कर सकता है। आजकल एक से एक अञ्जना से बढ़कर उन्नतकुचा नारियां देखी जाती हैं, पर वायु क्यों नहीं कामातुर होकर पकड़ता है ? उन्हें मनुष्यवत् पकड़कर भोग क्यों नहीं करता ? पर ऐसा न सुना गया न देखा गया। कथा आलंकारिक है। अब इसलिए मानना पड़ेगा कि वायु नाम का कोई पुरुष था जिसने अञ्जना के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उसके साथ भोग किया और हनूमान्जी उत्पन्न हुए। इन्हें **क्षेत्रज** कह सकते हैं।

नियोग से उत्पन्न पुत्र क्षेत्रज कहलाते हैं इसलिए हनूमान् केसरी के क्षेत्रज पुत्र हैं जैसाकि रामायण में ही स्पष्ट लिखा हुआ है—

सत्वं केसरिणः पुत्रः क्षेत्रजो भीमविक्रमः।
मारुतस्यौरसः पुत्रस्तेजसा चापि तत्समः ॥२९॥[2]

—[वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धाकाण्ड, अ० ६६]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम'—

"इस प्रकार तुम केसरी के क्षेत्रज पुत्र हो। तुम्हारा पराक्रम शत्रुओं के लिए भयंकर है। तुम वायुदेव के औरस पुत्र हो, इसलिए तेज की दृष्टि से भी उन्हीं के समान हो ॥२९-½॥

अतः हनूमान्जी केसरी के क्षेत्रज पुत्र थे।

'हनूमान्चालीसा' किसी अज्ञानी का बनाया हुआ है जिसने हनूमान्जी को शंकर व पार्वती का पुत्र लिख मारा जिससे सर्वत्र मिथ्या प्रचार हो गया। सब ही एक ही माता-पिता से उत्पन्न होते हैं, पुनः हनूमान् के तीन पिता मानना हनूमद्भक्तों की अज्ञानता और नासमझी है।

श्री हनूमान्जी की अद्भुत शक्ति व विद्वत्ता—

रामकथा के पात्रों में हनुमान्जी का बल, बुद्धि और अद्भुत कृत्यों के कर्त्ता तथा रामचन्द्रजी के अनन्य सेवक होने के कारण महत्त्वपूर्ण स्थान है। मध्य-कालीन रामकथा-साहित्य में हनूमान्जी के चरित्र का जो विकास हुआ है उसका उत्कृष्ट उदाहरण तुलसी-साहित्य के द्वारा प्राप्त होता है। 'विनय-पत्रिका' में

---

१. वही, प्रथम भाग, पृष्ठ ८४१-८४२ [संवत् २०२४ वि० में गीता प्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित, द्वितीय संस्करण]

२. वही, पृष्ठ ८४२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बल-पुरुषार्थ—

महामारुति के शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बल की इयत्ता न थी। वे देव, दानव और मानव आदि समस्त प्राणियों के लिए अजेय थे। वे कभी किसी से पराजित नहीं हुए, न कभी आहत ही हुए। यद्यपि एक बार मेघनाद ने इन्हें बन्धन में डाल दिया था, परन्तु वहाँ इनके बँध जाने का कारण कुछ और ही था। जब मेघनाद ने इनपर ब्रह्माजी के द्वारा प्रदत्त अस्त्र चलाया, तब उस ब्रह्मास्त्र का महत्त्व रखने के लिए ही स्वयं उसमें बँध गये थे। यदि वे चाहते तो उस ब्रह्मास्त्र को भी व्यर्थ कर देते, पर ऐसा न करने में दो कारण थे—प्रथम यह कि यदि वह अस्त्र विफल हो जाता तो जगत्स्रष्टा की अपार महिमा मिट जाती।

जाम्बवान् के आदेश पर ये हिमालय से ओषधियुक्त पर्वत को ही उठा लाये, जिससे उन ओषधियों के प्रयोग से मूर्च्छित श्रीराम, लक्ष्मण तथा समस्त वानर पुनः स्वस्थ हो गये। लक्ष्मणजी के मूर्च्छित हो जाने पर जब श्रीराम विलाप करने लगे, तब सुषेण के आदेशानुसार हनूमान्जी पुनः हिमालय से ओषधियुक्त पर्वत ले आये और उसकी ओषधि के प्रयोग से लक्ष्मण स्वस्थ हुए। [वाल्मीकीय रामायण ६।१०१।३०]

हनूमान्जी का ओषधिज्ञान—

हनूमान्जी को ओषधियों का भी पर्याप्त ज्ञान प्रतीत होता है चाहे वह सुषेण या जाम्ववान् की भाँति परिपक्व न रहा हो, अन्यथा इनको ओषधि लाने के हेतु न भेजा जाता।

श्री हनूमान्जी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् थे—

> **"सचिवोऽयं कपीन्द्रस्य सुग्रीवस्य महात्मनः।**
> **तमेव काङ्क्षमाणस्य ममान्तिकमिहागतः॥२६॥**
> **तमभ्यभाष सौमित्रे सुग्रीवसचिवं कपिम्।**
> **वाक्यज्ञं मधुरैर्वाक्यैः स्नेहयुक्तमरिंदमम्॥२७॥**
> **नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।**
> **नासामवेदविदुषः शक्यमेवं विभाषितुम्॥२८॥**
>
> —[वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धाकाण्ड, अध्याय ३]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम' कृत भा० टी०—

"सुमित्रानन्दन! ये महामनस्वी वानरराज सुग्रीव के सचिव हैं और उन्हीं के हित की इच्छा से यहाँ मेरे पास आये हैं॥२६॥ लक्ष्मण! इन शत्रुदमन सुग्रीव-सचिव कपिवर हनुमान् से, जो बात के मर्म को समझनेवाले हैं, तुम स्नेहपूर्वक मीठी वाणी में बातचीत करो॥२७॥ जिसे ऋग्वेद की शिक्षा नहीं मिली, जिसने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जानकी माता को अपना परिचय देते हुए श्रीराम की अवस्था का वर्णन करते हैं (अध्यात्मरामायण ५।२।३)। इन विवृत्तियों से मारुति में अणिमा और लघिमा इन दो सिद्धियों की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा का परिचय मिल जाता है।

महिमा—सागर को पार करने के समय परीक्षाकारिणी सुरसा के साथ प्रतियोगिता में मारुति ने अपने शरीर को क्रमशः उससे प्रायः सौ योजनों तक विस्तृत किया था (अध्यात्मरामायण ५।१।२०; वाल्मीकीय रामायण ५।१।-१६५) और जब हनूमान् जी ने 'वानर-सेनाओं के साथ आकर श्रीराम राक्षस-मंडित लंका को क्षणभर में भस्म कर देंगे'—ऐसी बात कही, तब जानकीजी ने पूछा—"हे कपे! तुम तो अत्यन्त लघुशरीरवाले हो और अन्य वानर-भालू भी तो तुम्हारे ही समान लघुकाय होंगे, फिर वे ऐसे बलिष्ठ विशाल शरीरधारी राक्षसों से कैसे लड़ेंगे?" सीताजी द्वारा ऐसा सन्देह व्यक्त किये जाने पर महावीर मारुति ने उन्हें आश्वस्त कराते हुए अपने को स्वर्ण शैल के समान विशाल बनाकर अपनी अतुल शक्ति का परिचय दिया (अध्यात्म रामायण ५।३।६४-½)।

इन दोनों अवसरों पर इनका क्रमिक वर्धमान शरीर विशालता के कारण अनन्त आकाश में मानो समावेश नहीं पा रहा था।

गरिमा—एक बार हनूमान्जी गन्धमादन के एक भाग में अपनी पूँछ फैलाकर स्वच्छन्द पड़े थे और भीमसेन उसको हटा न सके (महाभारत ३।१४७।-१५-१६, १९-२०)।

प्राप्ति—'प्राप्ति' सिद्धि के प्रतिष्ठित होने पर साधक योगी को इच्छित-वांछित पदार्थ मिल जाता है। श्रीमती सीताजी का अन्वेषण सर्वप्रथम इन्होंने ही किया [अध्यात्मरामायण ५।२।९-११]।

प्राकाम्य—'प्राकाम्य' सिद्धि की प्रतिष्ठा होने पर साधक जिस वस्तु की इच्छा करता है, वह उसे अचिर उपलब्ध हो जाती है। श्रीरामजी ने उनकी अनन्य भक्ति से प्रसन्न होकर उन्हें अनपायिनी भक्ति का वर प्रदान किया [वाल्मीकीय रामायण ७।४०।१५-२४; अध्यात्म रामायण ६।१६।१०-१४-½]।

ईशित्व—हनूमान्जी भगवान् श्रीराम की वानर-भालुओं की सेना का सम्यक् संचालन करनेवाले सफल सेनानायक थे और साथ ही परमभक्त भी थे, अतः ईशित्व-सिद्धि का भी प्रतिष्ठित रूप महावीरजी में साक्षात् दृष्टिगोचर होता है।

वशित्व—वशित्व-सिद्धि के प्रतिष्ठित हो जाने पर व्यक्ति में आत्मजयित्व भी स्वतः सिद्ध हो जाता है। हनूमान्जी अखण्ड ब्रह्मचारी एवं पूर्ण जितेन्द्रिय थे (रामरक्षास्तोत्र ३३) अतः अतुलित बलधामता उनमें निरन्तर विद्यमान रहती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अविलम्बित कहलाता है] तथा हृदय को आनन्द प्रदान करनेवाली कल्याणमयी वाणी का उच्चारण करते हैं ।।३२।। हृदय, कण्ठ और मूर्धा—इन तीनों स्थानों द्वारा स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त होनेवाली इनकी इस विचित्र वाणी को सुनकर किसका चित्त प्रसन्न न होगा ! वध करने के लिए तलवार उठाये हुए शत्रु का हृदय भी इस अद्भुत वाणी से बदल सकता है । ३३।।"[1]

हनूमान्‌जी का ब्रह्मचर्य व अध्ययन—

हनूमान्‌जी ने गोकर्ण के ऋषियों तथा सूर्य से सम्पूर्ण व्याकरण तथा वेद-वेदाङ्ग का पूर्ण अध्ययन कर सम्पूर्ण विद्याओं और कला आदि में बृहस्पति की भाँति पूर्ण योग्यता को प्राप्त किया ।

हनूमान्‌जी आदर्श राजदूत—

(श्री रामचन्द्रजी ने कहा कि :—)

"एवं विधो यस्य दूतो न भवेत् पार्थिवस्य तु ।
सिद्ध्यन्ति हि कथं तस्य कार्याणां गतयोऽनघ ।।३४।।
एवं गुणगणैर्युक्ता यस्य स्युः कार्यसाधकाः ।
तस्य सिद्ध्यन्ति सर्वेऽर्था दूतवाक्यप्रचोदिताः ।।३५।।"

—[वाल्मीकीय रामायण, सर्ग ३]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम'—

"निष्पाप लक्ष्मण ! जिस राजा के पास इनके समान दूत न हो, उसके कार्यों की सिद्धि कैसे हो सकती है ।।३४।। जिसके कार्यसाधक दूत ऐसे उत्तम गुणों से युक्त हों, उस राजा के सभी मनोरथ दूतों की बातचीत से ही सिद्ध हो जाते हैं ।।३५।।"[2]

श्री लक्ष्मणजी ने भी हनूमानजी को विद्वान् कहा था—

"विदिता नौ गुणा विद्वन् सुग्रीवस्य महात्मनः ।।३७।।"

—[वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धा काण्ड, सर्ग ३]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम'—

"विद्वन् ! महामना सुग्रीव के गुण हमें ज्ञात हो चुके हैं" ।।३७।।[3]

श्री हनूमानजी सर्वशास्त्रविशारद थे

महर्षि अगस्त्यजी ने श्री रामचन्द्रजी को कहा कि :—

"पराक्रमोत्साहमतिप्रतापसौशील्यमाधुर्यनयानयैश्च ।
गाम्भीर्यचातुर्यसुवीर्यधैर्यैर्हनूमतः कोऽप्यधिकोऽस्तिलोके ।।

---

१. वही, पृष्ठ ६८१-६८२
२. वही, पृष्ठ ६८२
३. वही, पृष्ठ ६८२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यजुर्वेद का अभ्यास नहीं किया तथा जो सामवेद का विद्वान् नहीं है, वह इस प्रकार सुन्दर भाषा में वार्तालाप नहीं कर सकता[1] ।।२८।।

हनूमान्जी व्याकरण के पूर्ण पण्डित थे—

"नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम् ।
बहुव्याहरतानेन न किंचिदपशब्दितम् ।।२६।।"

—[वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धाकाण्ड, सर्ग ३]

पं० रामनारायणदत्त शास्त्री—

"निश्चय ही इन्होंने समूचे व्याकरण का कई बार स्वाध्याय किया है; क्योंकि बहुत-सी बातें बोल जाने पर भी इनके मुंह से कोई अशुद्धि नहीं निकली ।।२६।।"[2]

हनूमान्जी की स्वर, प्रक्रिया, और वाक् व्यवहार-पटुता—

(श्री रामचन्द्रजी ने कहा है कि)—

"न मुखे नेत्रयोश्चापि ललाटे च भ्रुवोस्तथा ।
अन्येष्वपि च सर्वेषु दोषः संविदितः क्वचित् ।।३०।।
अविस्तरमसंदिग्धमविलम्बितमव्ययम् ।
उरःस्थं कण्ठगं वाक्यं वर्तते मध्यमस्वरम् ।।३१।।
संस्कारक्रमसम्पन्नामद्भुतानविलम्बिताम् ।
उच्चारयति कल्याणीं वाचं हृदयहर्षिणीम् ।।३२।।
अनया चित्रया वाचा त्रिस्थानव्यञ्जनस्थया ।
कस्य नाराध्यते चित्तमुद्यतासेररेरपि ।।३३।।"

—[वाल्मीकीयरामायण, किष्किन्धाकाण्ड सर्ग, ३]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम' कृत भा० टी०—

"सम्भाषण के समय इनके मुख, नेत्र, ललाट, भौंह तथा अन्य सब अंगों से भी कोई दोष प्रकट हुआ हो, ऐसा कहीं ज्ञात नहीं हुआ ।।३०।। इन्होंने थोड़े में ही बड़ी स्पष्टता के साथ अपना निवेदन किया है। रुक-रुककर अथवा शब्दों या अक्षरों को तोड़-मरोड़कर किसी ऐसे वाक्य का उच्चारण नहीं किया है, जो सुनने में कर्णकटु हो। इनकी वाणी हृदय में मध्यमा रूप से स्थित है और कण्ठ से बैखरी रूप में प्रकट होती है। अतः बोलते समय इनकी आवाज न बहुत धीमी रही है, न बहुत ऊँची। मध्यम स्वर में ही इन्होंने सब बातें कही हैं ।।३१।।"

ये संस्कार [व्याकरण के नियमानुकूल शुद्ध वाणी को संस्कार-सम्पन्न (संस्कृत) कहते हैं] और क्रम [शब्दोच्चारण की शास्त्रीय परिपाटी का नाम क्रम है] से सम्पन्न, 'अद्भुत', अविलम्बित [बिना रुके धाराप्रवाह रूप से बोलना

१. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, प्रथम भाग, पृष्ठ ६८१
२. वही, पृष्ठ ६८१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रयोग करूँगा तो सीता मुझे रावण समझकर भयभीत हो जाएँगी ॥१८॥ ऐसी दशा में अवश्य ही मुझे उस सार्थक भाषा का प्रयोग करना चाहिए, जिसे अयोध्या के आसपास की साधारण जनता बोलती है। अन्यथा इन सती-साध्वी सीता को मैं उचित आश्वासन नहीं दे सकता ॥१९॥"[1]

हनूमान्जी सन्ध्याविधि भलीभांति जानते थे—

"सन्ध्याकालमनाः श्यामा ध्रुवमेष्यति जानकी।
नदीं चेमां शुभजलां संध्यार्थे वरवर्णिनी ॥४९॥
तस्याश्चाप्यनुरूपेयमशोकवनिका शुभा।
शुभायाः पार्थिवेन्द्रस्य पत्नी रामस्य सम्मता ॥५०॥
यदि जीवति सा देवी ताराधिपनिभानना।
आगमिष्यति सावश्यमिमां शीतजलां नदीम् ॥५१॥

—[वाल्मीकीय रामायण, सुन्दरकाण्ड, सर्ग १४]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम'—

'यह प्रातःकाल की सन्ध्या (उपासना) का समय है। इसमें मन लगानेवाली और सदा सोलह वर्ष की ही अवस्था में रहनेवाली अक्षययौवना जनककुमारी सुन्दरी सीता सन्ध्याकालिक उपासना के लिए इस पुष्पसलिला नदी के तट पर अवश्य पधारेंगी ॥४९॥ जो राजाधिराज श्री रामचन्द्रजी की समादरणीया पत्नी है, उन शुभलक्षणा सीता के लिए यह सुन्दर अशोकवाटिका भी सब प्रकार से अनुकूल ही है ॥५०॥ यदि चन्द्रमुखी सीतादेवी जीवित हैं तो वे इस शीतल जलवाली सरिता के तट पर अवश्य पदार्पण करेंगी ॥५१॥"[2]

हनूमान्जी की वीरता का कार्य—समुद्र को पार करना—

क्या हनूमान्जी ने समुद्र को तैरकर पार किया था या उड़कर पार किया था? यह एक विवादास्पद प्रश्न है।

हनूमान्जी सागर को तैर करके गये थे—

"एष पर्वतसंकाशो हनुमान् मारुतात्मजः।
तितीर्षति महावेगः समुद्रं वरुणालयम् ॥२९॥
सागरस्योर्मिजालानामुरसा शैलवर्ष्मणाम्।
अभिघ्नंस्तु महावेगः पुप्लुवे स महाकपिः ॥६९॥
विकर्षन्नूर्मिजालानि बृहन्ति लवणाम्भसि।
पुप्लुवे कपिशार्दूलो विकिरन्निव रोदसी ॥७१॥

---

१. वही, पृष्ठ ९४०
२. वही, पृष्ठ ९०२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

असौ पुनर्व्याकरणं महीष्यन् सूर्योन्मुखः प्रष्टुमनाः कपीन्द्रः ।
उद्यद्गिरेरस्तगिरिं जगाम ग्रन्थं महद्धारयनप्रमेयः ।।४५।।
ससूत्रवृत्त्यर्थपदं महार्थं ससंग्रहं सिद्ध्यति वै कपीन्द्रः ।
नह्यस्य कश्चित् सदृशोऽस्ति शास्त्रे वैशारदे छन्दगतौ तथैव ।।४६।।
सर्वासु विद्यासु तपोविधाने प्रस्पर्धतेऽयं हि गुरुं सुराणाम् ।
सोऽयं नवव्याकरणार्थवेत्ता ब्रह्मा भविष्यत्यपि ते प्रसादात् ।।४७।।

—[वाल्मीकीय रामायण, उत्तरकाण्ड, सर्ग ३६]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम'—

"संसार में ऐसा कौन है जो पराक्रम, उत्साह, बुद्धि, प्रताप, सुशीलता, मधुरता, नीति-अनीति के विवेक, गम्भीरता, चतुरता, उत्तम बल और धैर्य में हनुमान्जी से बढ़कर हो ।।४४।। ये असीम शक्तिशाली कपिश्रेष्ठ हनुमान् व्याकरण का अध्ययन करने के लिए शङ्काएँ पूछने की इच्छा से सूर्य की ओर मुँह रखकर महान् ग्रन्थ धारण किए उनके आगे-आगे उदयाचल से अस्ताचल तक जाते थे ।।४५।। इन्होंने सूत्र, वृत्ति, वार्तिक, महाभाष्य और संग्रह, इन सबका अच्छी तरह अध्ययन किया है। अन्यान्य शास्त्रों के ज्ञान तथा छन्द:शास्त्र के अध्ययन में भी इनकी समानता करनेवाला दूसरा कोई विद्वान् नहीं है ।।४६।। सम्पूर्ण विद्याओं के ज्ञान तथा तपस्या के अनुष्ठान में ये देवगुरु बृहस्पति की बराबरी करते हैं। नौ व्याकरणों के सिद्धान्त को जाननेवाले ये हनूमान्जी आपकी कृपा से साक्षात् ब्रह्मा के समान आदरणीय होंगे ।।४७।।"[1]

हनूमान्जी अनेकभाषाविद् थे—

रावण की अशोकवाटिका में सीता की कुटिया के निकट वृक्ष पर छुपे हुए हनूमान्जी मन ही मन विचार कर रहे थे कि मैं सीताजी से बातें किये बिना ही वापस चला जाऊँ, तो यह सीताजी, श्री रामचन्द्रजी तथा मेरे लिए भी बहुत बुरी बात होगी। यदि सीताजी के साथ वार्तालाप आरम्भ करूँ तो किस भाषा में बोलूँ—

"यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम् ।
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति ।।१८।।
अवश्यमेव वक्तव्यं मानुषं वाक्यमर्थवत् ।
मया सान्त्वयितुं शक्या नान्ययेयमनिन्दिता ।।१९।।

—[वाल्मीकीय रामायण, सुन्दरकाण्ड, सर्ग ३०]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम'—

"परन्तु ऐसा करने में एक बाधा है, यदि मैं द्विज की भाँति संस्कृत वाणी का

१. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, द्वितीय भाग, पृष्ठ १५५५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थात्—समगति से जानेवाले बिना थके हुए हनूमान् अपार सागर (अपार सागर के जल को) आहत करते हुए नील मेघजाला की तरह समुद्रजाला को काटते हुए जाने लगे।

....

महाशय सी० वी० वैद्य, एम० ए० ने जो यह लिखा है कि हनूमान् समुद्र फाँदकर भारत से लंका गये वह सर्वथा अयुक्त है।...''[1]

ब्रह्मचारी पं० अखिलानन्दजी झरिया ने उपर्युक्त सुन्दरकाण्ड के श्लोकों द्वारा हनूमान्जी को समुद्र में **तैरना** ही अर्थ किया है।[2]

हनूमान्जी आदि वानर किसकी सन्तान थे ?

यदि वानर लोग बन्दरों की सन्तान थे, तो इनके हनूमान्, वाली, सुग्रीव, अंगद आदि नाम किसने रक्खे या रखवाये थे ? क्या आजकल भी बन्दरों में बच्चों के नामकरण-संस्कार कराये जाते हैं, और क्या वन आदि में स्वतन्त्र स्वच्छन्द विचरण करनेवाले बन्दरों के व्यक्तिगत पृथक्-पृथक् नाम होते हैं ? अथवा ये लोग उस समय के मनुष्यों के पालतू बन्दर थे जो उन पालनेवालों ने इनके नाम रख लिये हों। अध्ययनशील सज्जन जानते हैं, ऐसा कुछ नहीं था। इसलिए सीधा समझ में आता है कि इनके माता-पिता भी सभ्य और सुशिक्षित मनुष्य ही होंगे जिन्होंने इनके नाम रक्खे या रखवाये।

क्या वानर क्षत्रिय थे ?

श्री दुर्गाप्रसाद 'सनातनी' लिखते हैं— "...सम्पूर्ण वानर जाति क्षत्रियों की एक उच्च कोटि की जाति थी। उनमें बड़े-बड़े शूरवीर राजे-महाराजे, बड़े-से-बड़े शिल्प-इंजीनियर, महाबलशाली शूरवीर, वेदों व व्याकरण के उद्भट विद्वान्, वायुसेना के चालक व महायोगी हुए हैं।''[3]

श्री ईश्वरी प्रसाद 'प्रेम' एम० ए०, सिद्धान्तशास्त्री, सम्पादक 'तपोभूमि' लिखते हैं :—"सम्पूर्ण वानर जाति क्षत्रियों की एक उच्चकोटि की जाति थी, उनमें बड़े-बड़े शूरवीर राजे-महाराजे, बड़े-से-बड़े शिल्पी (इंजीनियर), महाबल-

---

१. द्रष्टव्य : प्रो० रामदेवजी बी० ए०, गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी (हरिद्वार) विरचित भारतवर्ष का इतिहास (वैदिक तथा आर्ष पर्व) पृष्ठ ३३८-३३९ (संवत् १९८० वि०, सन् १९२४ ई० में मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी द्वारा प्रकाशित, तृतीयावृत्ति)।

२. 'वेदवाणी' वर्ष १६, अंक १२, पृष्ठ ९७९, व ९८२

३. "हनुमान्जी बन्दर थे या मनुष्य ?" पृष्ठ १ (सन् १९७१ ई० में श्री दुर्गा-प्रसाद 'सनातनी' १०२ तालाब नवलराय, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरुमन्दरसंकाशानुद्गतान्   सुमहार्णवे।
अत्यक्रामन्महावेगस्तरङ्गान्   गणयन्निव ॥७२॥
तस्य वेग समुद्घुष्टं जलं सजलदं तदा।
अम्बरस्थं विबभ्रजे शरदभ्रमिवाततम् ॥७३॥

—[वाल्मीकीय रामायण, सुन्दरकाण्ड, सर्ग १][१]

अर्थ—पर्वत के समान दृढ़ हनूमान् महावेगवान् (मानो वेगवान् वायु के पुत्र ही हों) वरुणालय (समुद्र) को तैरने लगे। पर्वतशिला की तरह सुन्दर दृढ़ अपनी (उरसा अर्थात्) छाती से समुद्र के तरंगों पर धक्का देते हुए महावेगवान् कपि तैरने लगे। (महान् खारे जल में) अर्थात् महासागर में लहरों के जाल को चीरते हुए कपि शार्दूल उसी प्रकार (वेग से) तैरने लगे जैसेकि आकाश में फेंकी हुई कोई वस्तु (जा रही हो), वा द्यावा-पृथिवी-आकाश में चल रहे हों। उस समुद्र में मेरुमन्दर (पर्वतों) के समान उठे हुए तरंगों को गिनते हुए के समान महावेगवान् हनूमान् लांघ गया (तैर गया)। उस समय (उसके तैरने के) वेग से ऊपर को फैंका हुआ जल मेघ के साथ आकाश में ऐसा शोभने लगा जैसाकि फैला हुआ शरद् ऋतु का अभ्र वा बादल (हनूमान् के तैरने से पानी के छींटे बहुतायत से जो ऊपर उठते थे उन्हीं का समूह मेघवत् प्रतीत होता था। ऐसा भी ज्ञात होता है कि तैरने के समय मेघ भी छाये हुआ था)।"

इस प्रकरण में बहुत-से श्लोक ऐसे भी हैं जिनसे प्रतीत होता है कि हनूमान् उड़ते हुए जाते थे, परन्तु उनका भावार्य यह है कि हनूमान् बड़े वेग से जाते थे। अंग्रेजी भाषा में भी "फ्लाई" शब्द जिसका अर्थ "उड़ना" है "विशेष शीघ्रता के साथ चलने" के अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ करता है। परन्तु "उड़ने" के तात्पर्य को न समझ पीछे से लोगों ने इस प्रकरण में बहुत-से श्लोक ऐसे भी प्रक्षिप्त कर दिये हैं जिनसे प्रतीत हो कि हनूमान् सचमुच आकाश में ही उड़ रहे थे। परन्तु हनूमान् मनुष्य थे पक्षी नहीं और बिना पंखवाले को आकाश में उड़ना सृष्टि-नियमविरुद्ध है (और वहाँ यह भी नहीं लिखा है कि हनूमान् किसी आकाश-यान पर जा रहे थे) अत: यही सिद्ध होता है कि समुद्र में हनूमान् के बड़े वेग से तैरने को ही उड़ने के साथ उपमा दी है। हनूमान् लंका से लौटते हुए भी समुद्र तैरकर ही भारत में आए। हनूमान् के इस तैरने को इस प्रकार वर्णन किया गया है :—

"अपारमपरिश्रान्तश्चाम्बुधिं   समगाहत।
हनूमान् मेघजालानि विकर्षन्निव गच्छति॥

[सुन्दरकाण्ड ५७।६]

---

१. वही, पृष्ठ ८४९, व ८५१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भयम् अण् वानत् = फलादि, वानं रातीति कः), कीशः (कस्य = वायोः अपत्यम्, किः = हनूमान्, ईशः = स्वामीयस्य) वनौकाः (वनम् ओकः = गृहं यस्य) में ६ पुं० नाम वानर के हैं।"[1]

"कपिर्ना सिह्लके शाखामृगे च मधुसूदने। इति विश्व-मेदिन्यौ।"

"प्लवंगश्च मण्डूके तथा शाखामृगेऽपि च। इति मेदिनी। प्लवगः कपिभेकयोः। अर्कसूते। इति हैमः।"[2]

वनवासी—"भैक्षमाहरेत्...वनवासिषु।" —[मनुस्मृति ६।२७]

अर्थात्—"वनवासी गृहस्थ द्विजों से भिक्षा माँगे।"

वनचारी—

ऋषयश्च महात्मनः सिद्धविद्याधरोरगाः।
चारणाश्च सुतान् वीरान् ससृजुर्वनचारिणः॥६॥

[वाल्मीकीय रामायण, बालकाण्ड, सर्ग १४]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम'—

"महात्मा, ऋषि, सिद्ध, विद्याधर, नाग और चारणों ने भी वन में विचरनेवाले वानर-भालुओं के रूप में वीर पुत्रों को जन्म दिया।"[3]

इससे स्पष्ट होता है कि वानर-भालू आदि ऋषियों की सन्तान हैं।

'वनचारी' का अर्थ है "वन में रहनेवाला", वन में विचरण करनेवाला और वन के फलादि खानेवाला।

जिस भाव से उनको वनचारी कहा गया है उसी भाव से 'वानर' कहा कहा जाता है।

अतः 'वानर' और 'वनचारी' एक ही हैं।

"वानर—वान सम्बन्धि फलादिकं राति गृह्णाति"[3]

—[शब्दस्तोम महानिधिकोष]

जो वन के कन्दमूल फल खाते हैं वे वानर हैं।

'वा—गति गन्धनयोः = "वा धातु गति और गन्धन अर्थ में है और गति के तीन अर्थ हैं—ज्ञान, गमन और प्राप्ति। जो गतिशील नर हैं, गमनशील (तीव्र गति से चलनेवाले, दौड़नेवाले) हैं और जो प्राप्ति करने में सफल मनुष्य हैं वे **'वानर'** कहे जा सकते हैं।

---

१. अमरकोषः 'सुधा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतः (द्वितीयं काण्डम्), पृष्ठ ९४ [सन् १९७६ ई० में मोतीलाल बनारसीदास, चौक, वाराणसी-१ द्वारा प्रकाशित, द्वितीय संस्करण]
२. वही, पाद-टिप्पणी पृष्ठ ९४
३. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, प्रथम भाग, पृष्ठ ६५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शाली शूरवीर, वेदों व व्याकरण के उद्भट विद्वान्, वायुसेना के चालक, तथा महायोगी विद्यमान थे।"[1]

वानर की व्युत्पत्ति व अर्थ—

"वानरः पुं०-स्त्री० (वा विकल्पिनो नरः; यद्वा वाने वने भवं फलादिकं रातीति। वान+रा+क) पशुविशेषः, कपिः, प्लवङ्गः, प्लवगः, शाखामृगः, वलीमुखः; मर्कट, कीशः, वनौरा, मर्कः, प्लवः, प्रवङ्गः, प्रवगः, प्लवङ्गमः, प्रवङ्गमः, गोलाङ्गूलः, कपित्थास्यः, दधिशोण, हरिः, तरुमृगः, नगाटनः, झम्पी, झम्पारुः, कलिप्रियः, फिखिः, शालावृकः....।"[2]

पं० वामन शिवराम आप्टे—

"वानरः (वानं वनसंबंधि फलादिकं राति गृह्णति—रा+क, वा विकल्पेन नरो वा) बन्दर, लंगूर।...."[3]

चतुर्वेदी पं० द्वारका प्रसाद शर्मा, एम० आर० ए० एस० व पं० तारिणीश झा व्याकरण-वेदान्ताचार्यः—

"वानर—(पुं०) [वा विकल्पितो नरः अथवा वानं वने भवं फलादिकं राति, वान √रा+क) बन्दर।...."[4]

"कपिप्लवंगप्लवगशाखामृगवलीमुखाः।
मर्कटो वानरः कीशो वनौका अथ भल्लुके ।।३।।

[अमरकोशः, द्वितीय काण्डे, सिंहादिवर्गः ५]

पं० विश्वनाथ झा व्याकरणाचार्यः—

"कपिः(कम्पते इति इन् नलोपश्च), प्लवङ्गः(प्लवनम्, अप्, प्लयेन गच्छतीति-खच् मुम्, डित्वाट्टिलोप, डित्वाभावे प्लवङ्गमः इत्यपि पाठः), प्लवगः (प्लवेन गच्छति इति डः), शाखामृगः (शाखाचारी मृगः शाकमार्थिवादित्वात् समासः), वलीमुखः (वलीयुवतो मुखः), मर्कट (मर्कति = गृह्णाति इति अटन्), वानरः (वमे

---

१. "शुद्ध हनुमच्चरित" पृष्ठ २६(संवत् २०२८ वि० में सत्य प्रकाशन, वृन्दावन मार्ग, मथुरा द्वारा प्रकाशित, प्रथमावृत्ति)।

२. हलायुधकोशः (अभिधान रत्नमाला), पृष्ठ ६००-६०१ [सन् १९६७ ई० में हिन्दी समिति सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ द्वारा प्रकाशित, द्वितीय संस्करण]

३. "संस्कृत-हिन्दीकोश" पृष्ठ ९१७ [सन् १९६६ ई० में संस्कृत-अंग्रेजी कोश का आर्य भाषा में अनूदित सर्वश्री मोतीलाल बनारसी दास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७ द्वारा प्रकाशित]

४. "संस्कृत-शब्दार्थ कौस्तुभ" पृष्ठ १०३८ [सन् १९७५ ई० में रामनारायणलाल बेणीप्रसाद, प्रयाग २११००२ द्वारा प्रकाशित, पञ्चम संस्करण]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धनदस्य सुतः श्रीमान् वानरो गन्धमादनः ।
विश्वकर्मा त्वजनयन्नलं नाम महाकपिम् ॥१२॥
पावकस्य सुतः श्रीमान् नीलोऽग्निसदृशप्रभः ।
तेजसा यशसा वीर्यादत्यरिच्यत वीर्यवान् ॥१३॥
रूपद्रविणसम्पन्नावश्विनौ रूपसम्मतौ ।
मैन्दं च द्विविदं चैव जनयामासतुः स्वयम् ॥१४॥
वरुणो जनयामास सुषेणं नाम वानरम् ।
शरभं जनयामास पर्जन्यस्तु महाबलः ॥१५॥
मारुतस्यौरसः श्रीमान् हनूमान् नाम वानरः ।
वज्रसंहननोपेतो वैनतेयसमो जवे ॥१६॥
सर्ववानरमुख्येषु बुद्धिमान् बलवानपि ।
ते सृष्टा बहुसाहस्रा दशग्रीववधोद्यताः ॥१७॥

—[वाल्मीकीय रामायण, बालकाण्ड, सर्ग १७]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम' कृत भा० टी०—

"देवराज इन्द्र ने वानरराज वाली को पुत्ररूप में उत्पन्न किया, जो महेन्द्र पर्वत के समान विशालकाय और बलिष्ठ था। तपनेवालों में श्रेष्ठ भगवान् सूर्य ने सुग्रीव को जन्म दिया ॥१०॥ बृहस्पति ने तार नामक महाकाय वानर को उत्पन्न किया, जो समस्त वानर सरदारों में परम बुद्धिमान् और श्रेष्ठ था ॥११॥ तेजस्वी वानर गन्धमादन कुबेर का पुत्र था। विश्वकर्मा ने नल नामक महान् वानर को जन्म दिया ॥१२॥ अग्नि के समान तेजस्वी श्रीमान नील साक्षात् अग्निदेव का ही पुत्र था। वह पराक्रमी वानर तेज, यश और बलवीर्य में सबसे बढ़कर था ॥१३॥ रूप-वैभव से सम्पन्न, सुन्दर रूपवाले दोनों अश्विनीकुमारों ने स्वयं ही मैन्द और द्विविद को जन्म दिया था ॥१४। वरुण ने सुषेण नामक वानर को उत्पन्न किया और महाबली पर्जन्य ने शरभ को जन्म दिया ॥१५॥ हनूमान् नामवाले ऐश्वर्यशाली वानर वायुदेवता के औरस पुत्र थे। उनका शरीर वज्र के समान सुदृढ़ था। वे तेज चलने में गरुड़ के समान थे। सभी श्रेष्ठ वानरों में वे सबसे अधिक बुद्धिमान् और बलवान् थे। इस प्रकार कई हजार वानरों की उत्पत्ति हुई। वे सभी रावण का वध करने के लिए उद्यत रहते थे ॥१७॥"[1]

क्या वानरों की माताएँ बन्दरियाँ थीं ?

इन्द्र, सूर्य, बृहस्पति, कुबेर, विश्वकर्मा, अग्नि, अश्विनीकुमार, वरुण, पर्जन्य व वायु, ये सब विशिष्ट पुरुष थे, सबकी ही प्रायः पत्नियाँ थीं, सब ही के पुत्र थे।

१. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (सचित्र, हिन्दी भाषान्तर सहित) प्रथम भाग, पृष्ठ ६५-६६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रामायण में वानरों के लिए इन शब्दों का प्रयोग वानर शब्द के स्थान में उससे मिलता-जुलता-सा होने के कारण श्लोकों में जहाँ 'वानर' शब्द से छन्दोभङ्ग होते देखा वहाँ कर लिया गया। वैसे 'प्लव' के अर्थ "शब्दस्तोम महानिधि" में मेंढक, वानर, श्वपच, जलकाक प्रवण, (चतुष्पथ=चौराहा, नीचा स्थान, उदर, नम्र, आयत=दीर्घ खिचा हुआ (आकृष्ट)। अति यत्नशाली, स्निग्ध, कारण्डव पक्षी, शब्द, शत्रु, जलभेद, जलकुक्कुट, जलचर पक्षी सारसादि दिये गये हैं। देखिए—प्लव, प्रवण और आयत शब्दों के अर्थ।

'प्लवग' का अर्थ—'प्लवनसन्गच्छति' पानी पर तैरता हुआ-सा चलना दिया है। यही अर्थ 'प्लवङ्गम' का है।

वानर लोग बहुत फुर्तीलि, चुस्त, दौड़ने-भागने, शीघ्रता से कार्य करने में अति प्रवीण होते थे। कवि ने अपने काव्य में उनको 'प्लवङ्गम' कह दिया तो क्या आश्चर्य है?

शूरवीर मनुष्य को सिंह, सिंहपुरुष, नृसिंह, व्याघ्रपुंगव, पुरुषर्षभ आदि कहा जाता है। क्षत्रियों की वीरता के कारण उनके नामों के अन्त में 'सिंह' उपाधि है।

श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन को 'भरतर्षभ' कहा है। ऋषभ बैल होता है तो इसका अर्थ 'भरतकुलवालों का बैल' होना चाहिए, पर 'भरतकुल का वीर बलवान् व्यक्ति' ही सही अर्थ है।

'कपि' शब्द के अर्थ="कपिः पु० [कम्पते यः सदा। कपि चलने 'कुण्डित कम्प्योर्न लोपश्च' इति इ प्रत्ययः] वानरः···वराहः, रक्तचन्दनं, पिङ्गलम्··· [कं जलं पिबति किरणैः इति कपिः सूर्यः'—इत्युपनिषद्व्याख्यां रामानुजाचार्याः][1]

'कपि' का अर्थ 'सूर्य' होने से 'सूर्यवंशी' क्षत्रिय कपिवंशी भी कहला सकते हैं।

'बृहदारण्यकोपनिषद्' अध्याय २, ब्राह्मण ६, वाक्य ३ "कैशोर्य काप्यः"—कपिवंशी कैशोर्य ऋषि का उल्लेख है।

बृहदारण्यकोपनिषद् अध्याय ३, ब्राह्मण ३, कंडिका १ में व अध्याय ३, ब्राह्मण ७, कंडिका १ में "पतञ्जलस्यकाप्यस्य"=पतंजल कपिवंशी का उल्लेख है। कपिवंशी लोगों को कहीं 'कापेय' तथा 'काप्य' कहा गया होगा और कहीं कपि।

वानरों की उत्पत्ति—

> "वानरेन्द्रं महेन्द्राभमिन्द्रो वालिनमात्मजम्।
> सुग्रीवं जनयामास तपनस्तपतां वरः ॥१०॥
> बृहस्पतिस्त्वजनयत् तारं नाम महाकपिम्।
> सर्ववानरमुख्यानां बुद्धिमन्तमनुत्तमम् ॥११॥

---

१. "हलायुधकोश:" पृष्ठ २००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

। ।।२३।। मुख्य-मुख्य अप्सराओं, विद्याधरियों, नागकन्याओं तथा गन्धर्व-पत्नियों के गर्भ से भी इच्छानुसार रूप और वल से युक्त तथा स्वेच्छानुसार सर्वत्र विचरण करने में समर्थ वानरपुत्र उत्पन्न हुए ।।२४।।[1]

उपर्युक्त जो नाम लिए गये हैं ये सब मनुष्यवर्ग के नाम हैं, वन्दर-वन्दरियों के नहीं हैं।

अतः वानर बर्बर नहीं वरन् ऋषि-मुनियों की सन्तान हैं।

वानर लोग अपने-अपने पिताओं के रूपवाले ही थे—

"यस्य देवस्य यद्रूपं वेषो यश्च पराक्रमाः ।।१९।।
अजायत समं तेन तस्य पृथक् पृथक् ।
गोलाङ्गूलेषु किंचिदुन्नतविक्रमाः ।।२०।।

—[वाल्मीकीय रामायण, बालकाण्ड, सर्ग १७]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम'—

"जिस देवता का जैसा रूप, वेष और पराक्रम था, उससे उसी के समान पृथक्-पृथक् पुत्र उत्पन्न हुआ। लंगूरों में जो देवता उत्पन्न हुए, वे देवावस्था की अपेक्षा भी कुछ अधिक पराक्रमी थे[2] ।।१९-२०।।

वानरों का परिधान—

"सुग्रीवोऽप्यनदद् घोरं बालिनोह्वानकारणात् ।
गाढं परिहितो वेगान्नर्दन्भिन्दन्निवाम्बरम्" ।।१५।।

[वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धा काण्ड, सर्ग १२]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम'—

"सुग्रीव ने लंगोट से अपनी कमर खूब कस ली और वाली को बुलाने के लिए भयंकर गर्जना की। वेगपूर्वक किये हुए उस सिंहनाद से मानो वे आकाश को फाड़े डालते थे ।।१५।।[3]

कुछ लोग 'कटिवस्त्र' (फेंटा) अर्थ भी करते हैं।

यहाँ सुग्रीव को कमर में 'लंगोट' या कटिवस्त्र कसकर बांधे हुए बतलाया गया है।

राजस्थान के क्षत्रिय अब भी कमर में 'पटुका' (कमर में बाँधने का वस्त्र-विशेष, कमरवन्द, कमरपेच) बाँधते हैं। सिपाहियों की कमर में पेटी आदि सर्वत्र ही बाँधी जाती है। कमर कसकर खड़े हो जाने की लोकोक्ति भी प्रसिद्ध है। सुग्रीव ने भी वाली से युद्ध करने के लिए कपड़े से कमर कसी हुई थी।

---

१. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, प्रथम भाग, पृष्ठ ६६
२. वही, पृष्ठ ६६
३. वही, पृष्ठ ७०५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इनमें कई राजा थे, कई ऋषि थे। इन नामों और पदोंवाले व्यक्ति सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल तक के इतिहासों में मिलते हैं। पशुओं आदि से मैथुन करना धर्मशास्त्र के अनुसार भी पाप है और राजनियमों में दण्डयोग्य अपराध है। वर्तमान विधानों के अनुसार भी पशुओं से मैथुन करनेवालों के लिए दण्ड नियत है, अतः ऋषियों ने पशुओं से मैथुन करके यह पापकर्म और अपराध कदापि नहीं किया होगा। इससे स्पष्ट है कि हनूमान्जी आदि की माताएँ बन्दरियाँ नहीं हो सकती हैं।

"समानप्रसवात्मिका जातिः" ॥७१॥

—[न्याय दर्शन अ० २, आह्निक २]

पं० तुलसीराम स्वामी—

"(द्रव्यों में आपस का भेद होते हुए भी जिससे समान प्रसवपना पाया जाता है वह जाति है।"[1]

अर्थात् एक जाति के नर व मादा मिलकर उसी जाति की सन्तान उत्पन्न करते हैं। मनुष्य व पशु मिलकर सन्तानोत्पत्ति नहीं कर सकते हैं; यह सृष्टिक्रम के विरुद्ध है।

"ऋक्षीषु च तथा जाता वानराः किन्नरीषु च।
देवा महर्षिगन्धर्वास्तार्क्ष्य यक्षा यशस्विनः ॥२१॥
नागाः किंपुरुषाश्चैव सिद्धविद्याधरोरगाः।
बहवो जनयामासुर्हृष्टास्तत्र सहस्रशः ॥२७॥
चारणाश्च सुतान् वीरान् ससृजुर्वनचारिणः।
वानरान् सुमहाकायान् सर्वान् वै वनचारिणः ॥२३॥
अप्सरस्सु च मुख्यासु तथा विद्याधरीषु च।
नागकन्यासु च तथा गन्धर्वीणां तनूषु च।
कामरूपबलोपेता यथाकामविचारिणः ॥२४॥"

—[वाल्मीकीय रामायण, बालकाण्ड, सर्ग १७]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम'—

"कुछ वानर रीछ जाति की माताओं से तथा कुछ किन्नरियों से उत्पन्न हुए। देवता, महर्षि, गन्धर्व, गरुड़, यशस्वी यक्ष, नाग, किम्पुरुष, सिद्ध, विद्याधर तथा सर्प जाति के बहुसंख्यक व्यक्तियों ने अत्यन्त हर्ष में भरकर सहस्रों पुत्र उत्पन्न किए ॥२१-२२॥ देवताओं का गुण गानेवाले वनवासी चारणों ने बहुत-से वीर, विशालकाय वानरपुत्र उत्पन्न किये। वे सब जंगली फल-मूल खानेवाले

---

१. "न्यायदर्शन भाषा भाष्य" पृष्ठ ६४ [स्वामी प्रेस, मेरठ द्वारा मुद्रित व प्रकाशित, सप्तम बार]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम'—

"तदनन्तर वानर सेना के प्रधान-प्रधान वीर (हनूमान् आदि) **भीगे वस्त्रवाले** शोक-संतप्त सुग्रीव को चारों ओर से घेरकर उन्हें साथ लिये अनायास ही महान् कर्म करनेवाले महाबाहु श्रीराम की सेवा में उपस्थित हुए।"[1]

हनूमान्‌जी के श्वेत वस्त्र—

"ततः शाखान्तरे लीनं दृष्ट्वा चलितमानसा।
वेष्टितार्जुनवस्त्रं तं विद्युत्संघातपिङ्गलम् ॥१॥

—[वाल्मीकीय रामायण, सुन्दरकाण्ड, सर्ग ३२]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम'—

"तब शाखा के भीतर छिपे हुए, विद्युत्पुञ्ज के समान् अत्यन्त पिङ्गल वर्ण-वाले और **श्वेत वस्त्रधारी** हनूमान्‌जी पर उनकी दृष्टि पड़ी।"[2]

कुछ वन्दर वर्तमानकाल में भी वस्त्र धारण किये हुए देखे जाते हैं। बन्दर नचानेवालों के पास जो बन्दर होते हैं वे वस्त्र धारण किये हुए होते हैं। वास्तव में ये वन्दर स्वयं वस्त्र नहीं धारण करते वरन् उनके पालक बलपूर्वक धारण कराते हैं।

इस विवेचना से तात्पर्य यह है कि हनूमान् जी बन्दर नहीं थे, अपितु वानर थे, अर्थात् वानर-नाग-ऋक्ष नामक वनवासी या वनचारी ऋषियों की सन्तानों में से थे। वानर शब्द का पौराणिकों ने वन्दर अर्थ करके हनूमान् जी के दिव्य व्यक्तित्व को कलुषित भी किया है और निरादृत भी। छन्दभङ्ग से बचने के लिए ही कवियों ने वानर के पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया है, अतः कपीश या मर्कट आदि जातिगत संज्ञाओं से भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए। संसार का न कोई वन्दर वेदों को पढ़ पाया है, न कोई व्याकरण को, जबकि हनूमान् जी वेद-वेदांग के मर्मज्ञ, व्याकरण के महापण्डित और परम योगी थे। स्वयं मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीराम ने उनके पाण्डित्य को सराहा था। ऐसी दिव्यात्मा को बन्दर कहना न केवल अपनी संस्कृति का उपहास उड़ाना है अपितु हनूमान् जी को अपमानित करना भी है। □

---

१. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, पृ० ७४३

२. वही, द्वितीय भाग, पृष्ठ ६४४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ब्रह्मचारी पं० अखिलानन्द जी, झरिया ने पूर्वोक्त स्थल का अर्थ यह किया है—"वाली को बुलाने के लिए **कमर कसकर** सुग्रीव ने भयंकर घोर गर्जना करना आरम्भ कर दिया जिसकी ध्वनि से आकाश गुञ्जायमान हो गया।"[1]

"तं सदृष्ट्वा महाबाहुः सुग्रीवं पर्यवस्थितम्।
गाढं परिदधे वासो बालीपरमकोपनः"॥१६॥

—[वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धाकाण्ड, सर्ग १६]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री—

"इतने ही में श्रीमान बाली ने सुवर्ण के समान पिंगल वर्णवाले सुग्रीव को देखा जो लंगोट बाँधकर युद्ध के लिए उठकर खड़े थे और प्रज्वलित अग्नि के समान प्रकाशित हो रहे थे।"[2]

बालब्रह्मचारी पं० अखिलानन्द जी, झरिया—

"विशाल भुजावाले बाली ने सुग्रीव को सब प्रकार से सन्नद्ध देखकर अत्यन्त क्रोध करते हुए अपने **वस्त्रों को दृढ़ता के साथ बाँधा।**"[3]

वानर लोग अनेक वस्त्र पहनते थे—

"एवमुक्त्वा तु मां तत्र वस्त्रेणैकेन वानरः।
तदा निर्वासयामास बाली विगतसाध्वसः॥२६॥

—[वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धाकाण्ड, सर्ग १०]

साहित्याचार्य पं० रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम'—

"ऐसा कहकर वानरराज बाली ने निर्भयतापूर्वक मुझे घर से निकाल दिया। उस समय मेरे शरीर पर **एक ही वस्त्र** रह गया था।"[4]

यहाँ 'वस्त्रेणैकेन' एक वस्त्र से निकाला जाना यह सूचित करता है कि वानर लोग धोती के अतिरिक्त अंगरखा, दुपट्टा आदि अनेक वस्त्र पहनते थे।

सुग्रीव के गीले वस्त्र—

बाली की अन्त्येष्टि क्रिया (दाहसंस्कार) करने के बाद सुग्रीव गीले वस्त्र धारण किये हुए था और उसने सचैल स्नान किया था ऐसा कहा गया है—

"ततः शोकाभिसंतप्तं सुग्रीवं क्लिन्नवाससम्।
शाखामृगमहामात्राः परिवार्योपतस्थिरे"॥१॥

—[वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धा काण्ड, सर्ग २६]

---

१. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धा काण्ड, वेदवाणी वर्ष १५, अंक ११, पृष्ठ ८०४
२. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, प्रथम भाग, पृष्ठ ७१५
३. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धा काण्ड; 'वेदवाणी' वर्ष १५, अंक ११, पृष्ठ ८१५
४. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, प्रथम भाग, पृष्ठ ६६७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे विशिष्ट प्रकाशन

म० आनन्द स्वामी कृत पुस्तकें

प्रभु दर्शन	१२.००
तत्त्वज्ञान	१५.००
प्रभुमिलन की राह	१५.००
घोर घने जंगल में	१५.००
मानव और मानवता	२०.००
उपनिषदों का सन्देश	१२.००
दो रास्ते	१२.००
यह धन किसका है ?	१२.००
बोध कथाएं	१२.००
दुनिया में रहना किस तरह	६.५०
मानव-जीवन-गाथा	५.५०
प्रभुभक्ति	५.००
महामन्त्र	५.००
एक ही रास्ता	५.००
भक्त और भगवान्	५.००
आनन्द गायत्री-कथा	४.००
सुखी गृहस्थ	३.००
सत्यनारायणव्रत-कथा	३.००
शंकर और दयानन्द	४.००

श्री रणवीर लिखित

आनन्द स्वामी जीवनी (उर्दू)	१०.००

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती कृत

महाभारतम् (तीन भागों में)	४५०.००
वाल्मीकि रामायण	१००.००
चाणक्यनीति दर्पण	५०.००
,, ,, (राजसंस्करण)	८०.००
प्रार्थना प्रकाश	४.००
प्रभात वन्दन	४.००
दिव्य दयानन्द	६.००
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	१०.००
कुछ करो कुछ बनो	८.००
विद्यार्थियों की दिनचर्या	५.००
ब्रह्मचर्य गौरव	५.००
वैदिक विवाह पद्धति	४.००
आदर्श परिवार	८.००
ऋग्वेद का अक्ष-सूक्त	१.००
ऋग्वेद सूक्ति-सुधा	२५.००
अथर्ववेद सूक्ति-सुधा	१५.००
यजुर्वेद-सूक्ति-सुधा	१२.००
सामवेद सूक्ति-सुधा	१२.००
ऋग्वेदशतकम्	४.००
यजुर्वेदशतकम्	४.००
अथर्ववेदशतकम्	४.००
सामवेदशतकम्	४.००
भक्ति संगीत शतकम्	३.००
चमत्कारी ओषधियाँ	६.००
घरेलू ओषधियाँ	६.००

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार	५०.००
वैदिक संस्कृति का सन्देश	३५.००
ब्रह्मचर्य सन्देश	१५.००

पं० मदनमोहन विद्यासागर

संस्कार समुच्चय	४५.००
सत्यार्थ सरस्वती	२५.००
ईश्वर प्रत्यक्ष	६.००

डॉ० भवानीलाल भारतीय

श्रीकृष्ण चरित	२५.००
श्यामजी कृष्ण वर्मा	२४.००

स्वामी वेदानन्द सरस्वती

ऋषि बोध कथा	६.००
ईशोपनिषद्	४.५०

डॉ० प्रशान्त वेदालंकार

धर्म का स्वरूप	३५.००

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे विशिष्ट संग्रहणीय प्रकाशन

आलोचना

प्रो० नित्यानन्द पटेल

प्रेमचन्द के उपन्यास साहित्य में सांस्कृतिक चेतना	125.00
छायावाद : नया मूल्यांकन	35.00
पूर्व और पश्चिम	35.00

उपन्यास तथा कथा साहित्य

शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय

अपने पराये	12.00
अकेली	12.00
चन्द्रनाथ	12.00
अनुराधा	12 00
परिणीता	12.00
बैकुंठ का दानपत्र	12.00
बड़ी दीदी	12.00
देवदास	15.00
विराज बहू	12.00
बिन्दु का बेटा	12.00
ब्राह्मण की बेटी	12.00
पण्डित मोशाय	12.00
देहाती समाज	15.00
मझली दीदी	12.00

सुनील शर्मा

हितोपदेश	25.00

वि० अनन्त

माँ	30.00
आज की सावित्री	30.00
दुल्हन	30.00
देवता	30.00
मुझे जीने दो	30.00
कसम	30.00

तकनीकी

हयात

सुबोध रेडियो ट्रांजिस्टर मैकेनिक	25.00
सुबोध ट्रांजिस्टर सर्विसिंग	20.00
सुबोध ट्रांजिस्टर गाइड	25.00

घर गृहस्थी

डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा

गर्भ स्थिति, प्रसव और शिशुपालन	25.00

सुशीला कपूर

आधुनिक सिलाई-कटाई	25.00

मीनाक्षी धींगड़ा

पाक कला (पॉकेट साइज)	6.00
मिष्ठान्न कला (पॉकेट साइज)	6.00
अचार मुरब्बे चटनी (पॉकेट साइज)	6.00
शर्बत आइस्क्रीम स्ववेश („)	6.00

स्वास्थ्य

डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा

हृदय रोग : कारण निवारण	20.00

डा० टी० बी० एल० जायसवाल

कैंसर : कारण और निवारण	20.00

वैद्य सुरेश चतुर्वेदी

आहार चिकित्सा	25.00

डॉ० समरसेन

योगासन से इलाज	20.00

डॉ० प्रकाश भारती

घर का डॉक्टर (होम्योपैथी)	25.00

विविध

डॉ० द्वारकाप्रसाद

योग का वरदान	25.00

अरुण अर्णव

सचित्र एशियाई खेल (9वें एशियाई खेलों तक)	25.00

राजीव वत्स

जूडो फॉर ऑल	15.00
जूडो आत्मरक्षा के लिए	10.00

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

गीताञ्जलि	25.00

विकल

कृष्णवाणी	20.00

सुबोध पब्लिकेशन्स

2/3, अंसारी रोड, नई दिल्ली-110002

 वेदप्रकाश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

...त सिद्धान्तालंकार

...रा का वैज्ञानिक आधार	५०.००
वैदिक संस्कृति का सन्देश	३५.००
ब्रह्मचर्य सन्देश	१५.००
वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्व	४०.००
From Old Age to Yout...	78.00
एकादशोपनिषद्	...५.००
उपनिषद् प्रकाश	६५.००
संस्कार-चन्द्रिका	५०.००
बुढ़ापे से जवानी की ओर	४०.००
होमियोपैथिक के मूल सिद्धान्त	३०.००
होमियोपैथिक औषधियां चित्रण	६०.००
रोग उनकी होमियो० चिकित्सा	७५.००
श्रीमद् भगवद् गीता	५०.००

वैद्य गुरुदत्त

ब्रह्मसूत्र (दो भाग)	६४.००
न्याय दर्शन	५४.००
सांख्य दर्शन	४०.००
भारत : गांधी-नेहरू की छाया में	२०.००
राष्ट्र राज्य और संविधान	१५.००
बुद्धि बनाम बहुमत	१५.००
युगपुरुष राम	५.००
द्वितीय विश्वयुद्ध	५.००
महर्षि दयानन्द	३.००
दो लहरों की टक्कर (आठ भाग)	८०.००
मैं हिन्दू हूँ	१५.००
भाव और भावना	१२.००
वर्तमान दुर्व्यवस्था का समाधान हिन्दूराष्ट्र	१५.००

पं० उदयवीर शास्त्री

सांख्य दर्शन का इतिहास	५०.००
वेदान्त दर्शन का इतिहास	४०.००
ब्रह्मसूत्र (वेदान्त)	८०.००
सांख्य सिद्धान्त	४०.००
सांख्य दर्शन	२५.००
वैशेषिक दर्शन	४०.००
न्याय दर्शन	४०.००
योग दर्शन	४०.००

पं० सत्यकेतु विद्यालंकार कृत

आर्यसमाज का इतिहास (भाग १)	१००.००
" " (भाग २)	११०.००
" " (भाग ३)	१००.००
" " (भाग ४)	१००.००
प्राचीन भारतीय इतिहास का वैदिक युग	२८.००
दक्षिण पूर्वी और दक्षिणी एशिया में भारतीय संस्कृति	२३.००
म० एशिया व चीन में भारतीय "	२०.००
प्राचीन भारत	२८.००
भारतीय संस्कृति का विकास	२४.००
प्राचीन भारत का धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन	२४.००
एशिया का आधुनिक इतिहास	४४.००
प्रमुख राज्यों के संविधान	२४.००
समाज शास्त्र	३०.००
चाणक्य	२२.००
पतन और उत्थान	२६.००
सविता देवता भगवद्दत्त	३५.००
बृहस्पति देवता भगवद्दत्त	४०.००

स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती कृत

आत्म विज्ञान	हिन्दी	४०.००
	अंग्रेजी	३५.००
बहिरंग योग	हिन्दी	४५.००
	अंग्रेजी	३५.००
ब्रह्म विज्ञान	हिन्दी	७५.००
	अंग्रेजी	३५.००
निर्गुण ब्रह्म	हिन्दी	२५.००
दिव्य ज्योति	हिन्दी	४०.००
प्राण विज्ञान	हिन्दी	२५.००
	अंग्रेजी	३०.००
दिव्य शब्द विज्ञान	हिन्दी	४०.००
व्याख्यान माला (तीन भाग)	हिन्दी	८५.००

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

वेदमीमांसा ५०.००

पं० चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण

महाभारत सूक्तिसुधा ४०.००

ओम्प्रकाश त्यागी

वैदिक साहित्य का संक्षिप्त परिचय ६.००

विष्णुदयाल एम० ए०

महर्षि का सच्चा स्वरूप ४.००

प्रो० रामविचार एम० ए०

आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो ४.००

पं० सत्यपाल विद्यालंकार

श्रीमद्भगवद्गीता ८.००

सुरेशचन्द्र वेदालंकार

महकते फूल ६.००

पं० नरेन्द्र

हैदराबाद के आर्यों की साधना व संघर्ष ६.००

मनोहर विद्यालंकार

सरस्वती वन्दना ५.००

कवि श्री कस्तूरचन्द

ओंकार एवं गायत्री शतकम् ३.००

पं० राजनाथ पाण्डेय

वेद का राष्ट्रगान १.००

रामसिंह आर्योपदेशक

ओ३म् की व्याख्या २.००

प्रो० नित्यानन्द वेदालंकार

भगवत भजन जरूरी है १.५०

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय

मुक्ति से पुनरावृत्ति ३.००

पं० विश्वनाथ विद्यालंकार

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सरल अध्ययन २.००

पं० सुखदेव वेदवाचस्पति

नमस्ते की व्याख्या १.५०

बालोपयोगी

त्रिलोकचन्द विशारद

महर्षि दयानन्द २.५०

स्वामी श्रद्धानन्द २.५०

गुरु विरजानन्द २.५०

पं० लेखराम २.५०

स्वामी दर्शनानन्द २.५०

पं० गुरुदत्त २.५०

स्वामी दर्शनानन्द

बालशिक्षा-धर्मशिक्षा १.००

हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

वैदिक शिष्टाचार २.००

पं० सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०

नैतिक शिक्षा	प्रथम भाग	०.७५
नैतिक शिक्षा	द्वितीय भाग	०.७५
नैतिक शिक्षा	तृतीय भाग	१.५०
नैतिक शिक्षा	चतुर्थ भाग	१.५०
नैतिक शिक्षा	पंचम भाग	२.००
नैतिक शिक्षा	षष्ठ भाग	२.००
नैतिक शिक्षा	सप्तम भाग	२.५०
नैतिक शिक्षा	अष्टम भाग	२.५०
नैतिक शिक्षा	नवम भाग	३.००
नैतिक शिक्षा	दशम भाग	३.००

कर्मकाण्ड की पुस्तकें

वैदिक सन्ध्या ०.५०

आर्यसत्संग गुटका १.५०

पंचयज्ञ प्रकाशिका ४.००

चित्र - चित्र - चित्र

महर्षि दयानन्द रंगीन	२०×३०	३.००
महर्षि दयानन्द एक रंग	१८×२२	२.००
गुरु विरजानन्द एक रंग	१८×२२	२.००
स्वामी श्रद्धानन्द ,,	,,	२.००
स्वामी दर्शनानन्द ,,	,,	२.००
पं० हंसराज ,,	,,	२.००

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महामुनि कृष्णद्वैपायन व्यासजी प्रणीत

महाभारतम्

महाभारत धर्म का विश्वकोश है। व्यासजी महाराज की घोषणा है कि जो कुछ यहाँ है, वही अन्यत्र है, जो यहाँ नहीं है वह कहीं नहीं है। इसकी महत्ता और गुरुता के कारण इसे पञ्चम वेद कहा जाता है।

वेद को छोड़कर सभी वैदिक ग्रन्थों में प्रक्षेप हुए हैं। महाभारत भी इस प्रक्षेप से बच नहीं सका। महाभारत की श्लोक संख्या बढ़कर एक लाख पहुँच गई है। इसमें असम्भव गप्पों, अश्लील कथाओं, विचित्र उत्पत्तियों अप्रासाङ्गिक कथाओं को ठूंसा गया। इतने बड़े ग्रन्थ को पढ़ना कठिन हो गया।

आर्यजगत् के ही नहीं भारत के प्रसिद्ध विद्वान्

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

द्वारा तैयार एक विशिष्ट संस्करण।

इस ग्रन्थ में असम्भव, अश्लील और अप्रासांगिक कथाओं को निकाल दिया गया है। लगभग १६,००० श्लोकों में सम्पूर्ण महाभारत पूर्ण हुआ है। श्लोकों का तार-तम्य इस प्रकार मिलाया गया है कि कथा का सम्बन्ध निरन्तर बना रहता है।

☐ यदि आप अपने प्राचीन गौरवमय इतिहास की, संस्कृति और सभ्यता की, ज्ञान-विज्ञान की, आचार-व्यवहार की गौरवमयी झाँकी देखना चाहते हैं,

☐ यदि योगिराज कृष्ण की नीतिमत्ता देखना चाहते हैं,

☐ यदि प्राचीन समय की राज्य-व्यवस्था की झलक देखना चाहते हैं,

☐ यदि आप जानना चाहते हैं कि क्या कौरवों का जन्म घड़ों में से हुआ था? क्या द्रौपदी का चीर खींचा गया था, क्या एकलव्य का अंगूठा काटा गया था, क्या युद्ध के समय अभिमन्यु की अवस्था सोलह वर्ष की थी, क्या कर्ण सूतपुत्र था, क्या जयद्रथ को धोखे से मारा गया आदि

☐ यदि आप भ्रातृप्रेम, नारी का आदर्श, सदाचार, धर्म का स्वरूप, गृहस्थ का आदर्श, मोक्ष का स्वरूप, वर्ण और आश्रमों के धर्म, प्राचीन राज्य का स्वरूप आदि के सम्बन्ध में जानना चाहते हैं, तो एक बार इस ग्रन्थ को पढ़ जाइए।

विस्तृत भूमिका, विषय-सूची, श्लोक-सूची आदि से युक्त इस महान् ग्रन्थ का मूल्य है केवल ४५०) रुपये। तीन भाग।

गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली-६

प्रकाशक-मुद्रक विजयकुमार ने सम्पादित कर अजय प्रिंटर्स, दिल्ली-३२ में मुद्रित करा वेदप्रकाश कार्यालय, ४४०८ नयी सड़क, दिल्ली से प्रसारित किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi